डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–04 अप्रैल, 2020)

भक्तिकाल की विशेषताएं

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल एक टर्निंग प्वाइंट है। बिगनिंग प्वाइंट के बाद का टर्निंग प्वाइंट। मैंने पहले बतलाया था कि बिगनिंग प्वाइंट में सबकुछ नये सिरे से बनता है। इसलिए वह फॉरमेटिंग टाइम भी है। टर्निंग प्वाइंट में बने–बनाए राजपथ पर अचानक एक मोड़ आता है जो पूर्व के अन्तःसूत्रों के साथ जुड़े होने के बावजूद पूर्ण रूप से बदला हुआ दिखने लगता है। शक्तिकाल एक ऐसा ही मोड़ या टर्निंग प्वाइंट है। भक्तिकाल मध्यकाल का पहला चरण है। इसका समय 1400 ई0 से 1650 ई तक है। इन ढ़ाई सौ वर्षों में भारत में इस्लाम का आगमन एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इतिहासकार रामचंद्र षुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'भक्ति' का प्रादुर्भाव इस्लाम के आगमन से बतलाया वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने यह सिद्ध किया कि भारत में इस्लाम न भी आता तब भी हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति का आगमन होता ही।

भक्ति के आगमन के संबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि ऐतिहासिक विकास के तहत भक्ति का आना तय था, क्योंकि शरत में इस्लाम के आगमन से पूर्व ही दक्षिण भारत में भक्ति का प्रादुर्भाव हो चुका था। इसलिए इस्लाम के आने या न आने का कोई फर्क नहीं पड़ता है। दूसरे, द्विवेदी जी का यह भी मानना था कि आदिकाल के अंतिम मैथिली कवि विद्यापति ने भक्ति की अनेक कविताओं (पदावली) के माध्यम से उत्तर भारत में भक्ति के विकास में व्यापक योगदान दिया। इसलिए द्विवेदी जी ने भक्ति के आरंभिक कवि के रूप में विद्यापति को स्वीकार करते हैं। द्विवेदी जी के कथन से यह कतई नहीं माना जाना चाहिए कि भारत में इस्लाम के आगमन का प्रभाव भक्ति के विकास पड़ नहीं पड़ा। ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया मानकर चलने के बाद भी भक्ति के विकास में इस्लाम के प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

राजनीतिक अस्थिरता का युग :– राजनीतिक दृष्टिकोण से यह युग अस्थिरता एवं उथल–पुथल का रहा है। 1398 में तैमूरलंग द्वारा भारत पर आक्रमण से सैयद और लोदी वंषों का षासन स्थापित हुआ। इस समय देष में अनेक छोटे–छोटे राजे–रजवाड़े भी अपनी डफली बजा रहे थे। राजस्थान, बुंदेलखंड, उड़ीसा, गुजरात और दक्षिण के अनेक छोटे–छोटे अपना षासन चला रहे थे। इनमें परस्पर संघर्ष चलता रहता था, जिसके कारण स्थायित्व का अभाव था। उनके बीच संघर्ष का दूसरा कारण दिल्ली के मुस्लिम षासकों को लेकर था। सैयद और लोदी वंष के बीच कोई काबिल षासक न होने के

कारण यह वंष लंबे समय तक टिक नहीं सका। सिकन्दर लोदी एक मात्र प्रभावषाली षासक था किन्तु उसका वंषज इब्राहिम लोदी 1526 ई0 में पानीपत की लड़ाई में मुगलवंषी बाबर से हार गया। अल्पकाल में बाबर की मृत्यु के बाद हुमायू दिल्ली की गद्दी पर बैठा। षेरषाह (1540–45) से हुमायू की लड़ाई हुई थी, जिसमें हुमायू पराजित हुआ था। हुमायू के पुत्र अकबर का जन्म इसी संकटपूर्ण घड़ी में हुआ था। कुषल सेनापति बैरम खान या बहराम खान का कुषल प्रषिक्षण और संरक्षण अकबर को मिला, जिसके कारण पानीपत की दूसरी लड़ाई में अकबर विजयी हुआ और 1556 ई0 से 1605 ई0 तक अकबर ने भारत में राजनीतिक स्थायित्व कायम की।

<u>वैचारिक संपन्नता</u> :– वैचारिक संपन्नता भक्तिकाल की पहली विषेषता है। वैचारिक संपन्नता की दृष्टि से 'भक्तियुग' को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा जाता है। वस्तुतः यह काल वैचारिक आंदोलन, प्रचार और हिन्दी साहित्य के विकास का काल है। जायसी, कबीर, सूर और तुलसी इस युग के चार महानायक हैं। भारत की सामान्य जनता पर इन कवियों के विचारों की उत्कृष्टता और उनके नैतिक उपदेषों का व्यापक प्रभाव पड़ा। मध्यकालीन जीवन और साहित्य की प्रायः सभी प्रवृत्तियों का विकास इस काल में देखा जा सकता है। खासकर राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों से इस युग के साहित्य को विषेष उर्जा मिली। भारतीय दर्षन, ज्योतिष, धर्म, आयुर्वेद आदि का विकास भी इस युग में हुआ।

वैचारिकता इस युग की उत्कृष्टता है। आदि षंकराचार्य ने ब्रह्म–सूत्रों की अद्वैतपरक व्याख्या कर वेदान्त दर्षन को एक नया जीवन दिया और षंकर का अद्वैत मत प्रतिष्ठित हुआ। इस प्रकार संपूर्ण जीवजगत को ब्रह्म सिद्ध करने वाला अद्वैत दर्षन एक नयी चेतना और व्यापक दृष्टि का विकास किया। यह दृष्टि सामाजिक व्यवस्था के गठन के लिए सहायक बना। हिन्दी के संत काव्य पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। अद्वैत मत और भक्ति के मुख्य कर्तव्य की काफी प्रतिक्रिया हुई। व्यावहारिक कमियों के धरातल पर अद्वैत दर्षन में बाद चलकर सुधार किया गया, जिनमें मुख्य दार्षनिक हैं–रामानुजाचार्य (विषिष्टाद्वैतवाद), विष्णु स्वामी और वल्लभाचार्य का (षुद्धाद्वैतवाद), निम्बार्क का (द्वैताद्वैतवाद) और मध्वाचार्य का (द्वैतवाद)। इन्हीं सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन चला, जिसके मुख्य प्रवर्तक आलवार भक्त थे और उत्तर में रामभक्ति और कृष्ण भक्ति के विभिन्न संप्रदाय खड़े हुए।

<u>निर्गुण काव्यधारा या संत काव्यधारा</u> :– निर्गुण काव्यधारा परंपरा का मूल स्रोत सिद्धों और नाथों की वाणियों में देखा जा सकता है। निर्गुण पंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ हैं, किन्तु भक्तियुग के साहित्य में सबसे पहले नामदेव की पदावली में निर्गुण उपासना पर बल मिलता है। संत काव्यधारा के प्रर्वतक कबीर थे। कबीर के काव्य में निर्गण निराकार ब्रह्म की उपासना पर बल मिलता है। वे पढ़े लिखे नहीं थे। निरक्षर थे। किन्तु मौखिक रूप से उन्होंने विषाल वाणियों की रचना की। उनके काव्य साखी, सबद और रमैनी तीन

भागों में विभाजित था। साखी में मानवता और जीवन संबंधी उपदेष है, सबद में योग साधना और भक्ति भाव के पद हैं और रमैनी में दार्षनिक विचारों का लेखा मिलता है। कबीर की निर्गुण भक्ति में हिन्दु–मुस्लिम ऐक्य, सामाजिक समानता और हिन्दु–मुस्लिम के बीच के भेदभाव को मिटाने का भाव था। उनके उपदेषों सूफी मत तथा वैष्णव मत का प्रभाव देखा जा सकता है। यह भी कि वे ईष्वर के उपासक नहीं थे और न ही भगवान को मानते थे। आडंबर के घनघोर विरोधी थे। प्रेम–सौंदर्य और मानवता उनके निर्गुण काव्य या निर्गुण उपासना का मूल लक्ष्य था। साहस और निर्भीकता उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण भाग था। अपने साहस और निर्भीकता से ही उन्होंने ब्राह्मणवाद और उसके आडंबर के साथ हिन्दुत्व या ईष्वरत्व का विरोध किया। उनका निर्गुण निराकार राम केवल एक नाम था, जिससे उन्होंने निर्गुण निराकार राम के सर्वषक्तिमान स्वरूप, सर्वव्यापी स्वरूप और उसकी विराटता का परिचय नये समाज और मनुष्यता के निर्माण के संदर्भ में किया। उन्होंने ईष्वर की पूजा की जगह साधना पर बल दिया और बतलाया कि जड़ और चेतन सभी में वह विराट तत्व विराजमान है–

'घट–घट में वह सांई रमता, कटुक वचन मत बोल रे।' –कबीर

इस प्रकार कबीर के संत मार्ग का तत्कालीन जन जीवन पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। रैदास, धर्मदास, गुरुनानकदेव, दादू दयाल, बावरी साहिबा, मलूकदास, प्राणनाथ आदि इसी संत काव्यधारा के कवि थे। संत कवियों की मुख्य विषेषता है–

1. वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे।
2. उन्होंने गुरू को सर्वाधिक महत्त्व दिया।
3. उनके द्वारा योग–साधना और नाम सुमिरन पर बल दिया गया।
4. उन्होंने वाह्याडंबर, छुआछूत, वर्ण–जाति और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया।
5. भक्ति का मूल भाव प्रेम, मानवता और सामाजिकता है।
6. अद्वैत दर्षन और जीवन में समानता के भाव मुख्य हैं।
7. आँखिन देखि तथ्यों और अपने ज्ञान की षक्ति पर भरोसा।
8. खिचड़ी भाषा या अक्खड़ भाषा में ज्ञान का प्रचार–प्रसार और काव्य रचना।

<u>सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा</u> :– संत कवियों की तरह सूफी मुसलमान कवियों ने हिन्दु–मुस्लिम संस्कृति के समन्वय का परचम लहराया। ये सूफी कवि कट्टर इस्लामिक नहीं थे। वे उदार दृष्टिकोण वाले रहस्यवादी संत थे। इस्लाम धर्म की कुछ बातों को लेकर इन्होंने हिन्दु समाज में प्रचलित प्रेम कहानियों को अपना आधार बनाया और सूफी प्रेम–भावना का प्रचार किया। प्रेम के माध्यम से ईष्वर का साक्षात करना इनका मूल ध्येय था। सूफियों के प्रायः काव्य अवधी में लिखे गये हैं, जिसका पूर्ववर्ती रूप मुल्ला दाऊद के 'चंदायन' में मिलता है। इसके प्रमुख कवि कुतबन (1501 ई0, रचना– 'मृगावती'), मलिक मुहम्मद जायसी (1492–1552 ई0, रचना– 'पद्मावत'–1540, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा आदि), मंझन ('मधुमालती'–1545 ई0), षेख उसमान ('चित्रावली' 1613

ई0), षेख नबी ('ज्ञानद्वीप' 1619 ई0) और जान कवि आदि मुख्य हैं। सूफी काव्यधारा की मुख्य विषेषता है–

1. वे प्रायः मुसलमान सूफी कवियों द्वारा लिखे गये हैं।
2. उनकी रचनाएं प्रायः अवधी भाषा में दोहा–चौपाई षैली में मिलते हैं।
3. सूफी कवियों ने लौकिक प्रेम कथाओं को माध्यम बनाकर आत्मा–परमात्मा के अलौकिक प्रेम संबंधों का चित्रण किया है।
4. काल्पनिकता के समावेष के साथ–साथ अलौकिक तत्वों की भरमार है।
5. प्रेमाख्यानों द्वारा हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति को समन्वित करने का प्रयास किया गया, जिससे हिन्दू–मुस्लिम एक–दूसरे के निकट आये।
6. मानव जीवन में त्याग, तप, सहनषीलता, संघर्ष और प्रेम का नये रूप में चित्रण।

इस प्रकार सूफी साहित्य न केवल हिन्दू–मुस्लिम की एकता पर बल दिया बल्कि प्रेम की भावनाओं का बीजारोपण कर अपने साहित्य का सामाजिक महत्त्व प्रदर्षित किया।

<u>सगुणोपासक भक्ति काव्यधारा</u> :– संत काव्यधारा खासकर संत कबीर के समय की ज्ञान की आंधी के समक्ष बड़े–बड़े ज्ञानी दार्षनिक व रचनाकार भूमिगत हो गये थे। उनमें कबीर के समक्ष खड़े होने का साहस नहीं था। वे मूल रचना लिखने के बजाय टीका लिख रहे थे। कबीर की मृत्यु के पष्चात भी समाज में कबीर के प्रभाव के समक्ष कबीर का सीधा विरोध करने का साहस उनमें न था। सूरदास पहले ब्राह्मण कवि हैं, जिन्होंने बड़े सलीके से कबीर और उसके निगुर्ण का विरोध किया– 'अविगत गति कछु कहत न आवै.....सूर सगुण पद गावै।' कविता के पूरे संदर्भ को देखें तो यह विरोध स्पष्ट हो जायेगा और कबीर के सामाजिक प्रभाव का भय भी स्पष्ट हो जायेगा। सूर के बाद तुलसी के सगुण काव्य में भी यह बात दिखती है, पर साथ ही काव्य के स्तर पर तुलसी का विराटत्व भी दिखता है। जैसे कबीर जनसाधारण के कंठ में बसे थे, उसी तरह तुलसी के 'रामचरितमानस' के व्यापक प्रचार–प्रसार के कारण तुलसी के काव्य और उनका दृष्टिकोण भी लोगों के दिलो दिमाग पर छा गया। सूर कृष्ण काव्यधारा के प्रमुख कवि थे और तुलसी राम काव्यधारा के प्रमुख कवि।

<u>कृष्ण काव्यधारा</u> :– कृष्ण काव्यधारा के मुख्य कवि हैं– सूरदास (1478–1535 ई0)। इनकी मुख्य रचाना है–1. सूरसरावली 2. साहित्यलहरी 3. सूरसागर। उनके अतिरिक्त मुख्य कवि हैं 1. नंददास 2. हित हरिवंष 3. मीराबाई 4. रसखान आदि। कृष्ण काव्यधारा की प्रमुख विषेषता है :–

1. निर्गुण निराकार ब्रह्म का विरोध और सगुण साकार ब्रह्म की स्थापना पर बल।
2. अद्वैतवाद की संषोधित व्याख्या।
3. कृष्ण काव्यधारा का मूल आधार 'श्रीमद्भागवद' है।
4. भक्ति का चरम रूप भक्त और भगवान के बीच अभिन्नता।
5. कृष्ण की आह्लादिनी षक्ति के रूप में राधा की प्रतिष्ठा।

6. लीला वर्णन– वात्सल्य, साख्य, माधुर्य, दास्य और षांत भाव में।
7. प्रेम–सौंदर्य वर्णन का उत्कर्ष।
8. ब्रजभाषा की कोमलता का निरूपण।
9. राधा–कृष्ण का अतिषय सौंदर्य वर्णन– रीतिकाव्य का आधार बना।
10. कृष्ण का लोकरक्षक रूप।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कृष्ण काव्यधारा में भक्ति के प्रवाह से एक बेहतर सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका का निर्माण हुआ, जो तत्कालीन आर्थिक रूप से विपन्न समाज और उसके जीवन के लिए अत्यंत जरूरी उपादान था।

<u>राम काव्यधारा</u> :– राम काव्यधारा के प्रमुख कवियों में 1. गोस्वामी तुलसीदास हैं। इनकी मृख्य रचनाएं हैं–1.रामलला नहछू 2.पार्वती मंगल 3.जानकी मंगल 3.बरवै रामायण 4.वैराग्य संदीपनी 5.रामाज्ञा प्रष्न 6.कवितावली 6.दोहावली 7.गीतावली 8. कृष्ण गीतावली 9. विनय पत्रिका और रामचरितमानस आदि। राम काव्यधारा की सामान्य विषेषताएं हैं :–

1. राम काव्यधारा को दो षाखाएं मानी जाती हैं– मर्यादावादी और रसिक काव्यधारा।
2. मर्यादावाद अर्थात् समाज की व्यवस्था में अनुषासन और मर्यादा की स्थापना।
3. वैष्णव–षैव का समन्वय तथा निर्गुण–सगुण की एकरूपता स्थापित करना।
4. 'रामचरितमानस' मर्यादावादी प्रबंध काव्य है और गेय काव्य रसिकतावादी।
5. रसिकोपासक संप्रदाय के रामभक्त कवियों पर कृष्णकाव्य की रसिकता का प्रभाव।

राम काव्यधारा जिसका सीधा संबंध मुगलकालीन षासक अकबर के समय से है। राजा और प्रजा के बीच के संबंधों और लोक लुभावन षासन पद्धति को देखकर ऐसी संभवना प्रकट होती है कि तुलसीदास ने राम के बरक्स अकबर को या अकबर के बरक्स राम को देखा हो। राम के विराट चरित्र की कथा के बरक्स 'अकबर द ग्रेट' की समानता की झलक दिखलायी पड़ी हो। इस ओर खोज की जा सकती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्तियुग वैचारिक संपन्नता का युग है। इसमें हिन्दी काव्य के विविध प्रकार की उत्कृष्टता एक साथ झिलमिलाती हुई देखने को मिलती है। आत्मालोचन एवं दुनिया की पहचान विद्रोह व षालीनता पूर्वक की गयी है। इस युग का आत्मालोचन पूरी दुनिया और जीवन के प्रवाह के साथ आलोचना की तीक्ष्ण दृष्टि को परिभाषित करती है, जिसमें वैयक्तिक जीवन के साथ–साथ समग्र मानव जीवन को भर आत्मसात करती है। इस दृष्टि से यह युग आधुनिक युग की आलोचना की एक पृष्ठभूमि भी है जो न केवल स्वयं की आलोचना करती है बल्कि समाज और युग की आलोचना से जुड़ जाती है।

दिनांक :– 04 अप्रैल, 2020 — महेष प्रसाद सिन्हा